ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 14 अंक 39 कुल पृष्ठ-8 8 से 14 अगस्त, 2019 दयानन्दाब्द 194 सृष्टि सम्वत् 1960853120 सम्वत् 2076 श्रा. कृ..-13

श्रावणी पर्व (वेद प्रचार सप्ताह) हर्षोल्लास के साथ समारोह पूर्वक मनायें

तीव्र गति से बढ़ते हुए धार्मिक पाखण्ड एवं अन्धविश्वास को जड़मूल से समाप्त करने के लिए आर्यजन लें संकल्प

– स्वामी आर्यवेश

श्रावणी महापर्व के अवसर पर आयोजित किये जाने वाले ''वेद प्रचार सप्ताह'' के कार्यक्रमों के परिप्रेक्ष्य में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने आर्य समाजों के समस्त अधिकारियों तथा आयोजकों का आह्वान करते हुए कहा कि आर्य समाज ही वह संगठन है जो समाज में फैले अन्धकार को अविद्या को अज्ञान को अन्धविश्वास को कुरीतियों को रूढ़ियों को भस्म करने में सक्षम है। आवश्यकता इस बात की है कि तीव्र गति से पनप रहे धार्मिक पाखण्ड तथा अनेकों अन्य सामाजिक बुराइयों से आक्रान्त इस देश की दूषित हो चुकी व्यवस्था को बदल कर एक नई व्यवस्था खड़ी करने की और इसके लिए आवश्यक है कि हम अधिक से अधिक युवाओं को महर्षि दयानन्द और आर्य समाज से परिचित करायें, उनको निकट लाकर आर्य समाज के सेवा प्रकल्पों से जोड़ें। जन सम्पर्क अभियान को पूरी ताकत के साथ प्रारम्भ करें और आर्य समाज में नये रक्त का संचार करें।

स्वामी आर्यवेश जी ने आर्य युवकों का आह्वान करते हुए कहा कि सारे देश में जीवन की ज्योति जगाने वाले आर्य समाज की स्थापना भटकते हुओं का पथ प्रदर्शन करने के लिए प्रकाश स्तम्भ के रूप में की गई थी। आज

देश में गोहत्या, नशाखोरी के साथ-साथ धार्मिक पाखण्ड ने अपनी सारी सीमायें तोड़ दी हैं। स्वामी जी ने कहा कि आज धर्म के नाम पर अनेकों तरह की दुकाने चल रही हैं जिनका काम येन-केन प्रकारेण ग्राहक जुटाना व उनका शोषण करना है। अमर नाथ यात्रा, कांवर यात्रा, हज यात्रा, मंदिरों में चमत्कारों को प्रदर्शित करना, हाथ हिलाकर सोने की जंजीर निकालना, वृक्षों पर पहाड़ों पर देवताओं की आकृतियाँ प्रकट होना, यह सब अत्यन्त सुनियोजित ढंग से चलाये जा रहे क्रिया-कलाप हैं जिसके प्रभाव में भोली-भाली धर्म परायण जनता आ जाती है और उनका भरपूर शोषण किया जाता है। इन सब पाखण्डों का संचालन करने वाले मठाधीशों और गुरु घंटालों ने अपनी ताकत इतनी बढ़ा ली है कि सरकार तथा प्रशासन उनके खुले अनाचार, भ्रष्टाचार, व्यभिचार पर हाथ डालने से घबराता है। प्रतिदिन ही अखबारों और दूरदर्शन के माध्यम से इन विकृत चरित्र वाले ढोंगी पाखंडियों की दिल दहला देने वाली खबरें सुनी तथा पढ़ी जाती हैं। अब समय आ गया है कि धार्मिक पाखण्ड को जड़मूल से मिटा दिया जाये और इसके लिए आवश्यक है कि जनता को इन पाखण्डियों के जाल से मुक्त कराना होगा। जब तक आम जनता में जागृति नहीं आयेगी तब तक कुछ नहीं हो सकता। आर्य समाज ने अपने जन्म काल से ही इस प्रकार के पाखण्ड को दूर करने के लिए प्रयास किये हैं। आज शेष पृष्ठ 4 पर

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की कार भीषण सड़क दुर्घटना में पूर्ण रूप से हुई क्षतिग्रस्त

सर्वशक्तिमान ईश्वर की अपार कृपा से स्वामी आर्यवेश जी पूर्ण रूप से स्वस्थ तथा सकुशल

दिनांक 5 अगस्त, 2019 को स्वामी आर्यवेश जी अपने सामाजिक कार्यक्रमों को सम्पन्न करके रात्रि में दिल्ली से टिटौली (आश्रम), रोहतक जाने के लिए गाड़ी को स्वयं चलाकर निकले। रात्रि लगभग 10.30 बजे ग्राम–खरावड़, रोहतक के पास अचानक उनकी गाड़ी का भीषण एक्सीडेंट हो गया। उस समय उनके साथ गाड़ी में एक ब्रह्मचारी धर्मदेव भी थे। एक्सीडेंट इतना भीषण था कि गाड़ी साईड की रेलिंग तोड़कर कई कलाबाजियाँ खाती हुई एक गहरे गड्ढे में जाकर गिर गई। गाड़ी के परखच्चे उड़ गये, लेकिन चमत्कार हुआ और इतनी भीषण दुर्घटना के बाद भी स्वामी जी सकुशल स्वयं गाड़ी के पिछले टूटे हुए शीशे से बाहर निकल आये और उनके साथ ब्रह्मचारी

धर्मदेव भी पूर्ण स्वस्थ रूप से स्वयं ही टूटी हुई खिड़की से बाहर निकल आये।

ऐसा लगता है कि कण–कण में व्याप्त सर्वशक्तिमान परमपिता परमात्मा ने ऐसी परिस्थितियाँ पैदा कर दी कि इतनी भीषण दुर्घटना के बाद भी स्वामी जी पूरी तरह सुरक्षित बच गये। जैसा कि आप सबको विदित ही है कि स्वामी आर्यवेश जी अहर्निश ईश्वरीय ज्ञान वेद का प्रचार–प्रसार और ईश्वर में अपार आस्था रखने वाले महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों, सिद्धान्तों और उनके ही द्वारा स्थापित आर्य समाज के कार्यों को बढ़ाने में अनथक परिश्रम करते रहते हैं। ईश्वर में अगाध आस्था होने की वजह से ईश्वर की कृपा बनी रही। परमात्मा उन्हें दीर्घजीवी बनायें जिससे वे आर्य समाज के प्रचार–प्रसार में और अधिक योगदान दे सकें।

– प्रो. विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री/सम्पादक

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

16 अगस्त बलिदान दिवस पर विशेष

कर्जन वायली से बदला लेने वाले

वीर शहीद मदनलाल ढींगरा

(क्रांतिकारी शहीद भगतसिंह द्वारा लिखित)

(अंग्रेजों की धरती पर ही अंग्रेजों के अत्याचारों का बदला लेने वाले इस साहसी क्रांतिकारी का यह जीवन परिचय 'किरती' समाचार पत्र, मार्च 1928 में क्रांतिकारी भगतसिंह ने 'विद्रोही' नाम से लिखा था। वहाँ से उद्धृत कर उसे यथावत् रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। - संपादक)

अब फिर यह बताने की जरूरत नहीं कि भारतवर्ष की आजादी के लिए जितनी कुर्बानी पंजाब प्रान्त ने की है, उतनी किसी और प्रान्त ने नहीं की। बीसवीं सदी के शुरू होने के साथ ही भारत में एक बार नई अशान्ति की लहर दौड़ गई, जिसका परिणाम स्वदेशी आन्दोलन की शक्ल में प्रकट हुआ। तब भी पंजाब ही बंगाल का साथ दे सका था। गुलामी की जंजीरें दिनों दिन जकड़ी देखकर जब दर्द शुरू हुआ तब बहुत से नौजवान अपने देशप्रेम में पागल हुए दिलों को केवल लेक्चरबाजी और प्रस्तावबाजी मात्र से सन्तोष न दे सके और कुछ दिल-जले लोगों ने युग पलट आन्दोलन चलाया। यह आन्दोलन उन देशप्रेमी युवकों को अपनी ओर खींचने में सफल हो गया और इन परवानों ने स्वतंत्रता देवी के चरणों में अपने जीवन तक बलिदान कर दिये और मुर्दा देश को फिर मृत्यु के प्रति निर्भयता दिखाकर पुराने बुजुर्गों की याद ताजा कर दी।

यह युग पलटने वाले या विद्रोही लोग कैसे विचित्र होते हैं, इसका कुछ वर्णन बंगाल के विद्रोही कवि नजरूल इस्लाम ने अपनी 'विद्रोही' कविता में किया है। मौत के हाथ में हाथ डालकर खेल करने वाले, गरीबों के सहायक, आजादी के रक्षक, गुलामी के दुश्मन, जालिमों, अत्याचारियों और मनमानी करने वाले शासकों के शत्रु इन विद्रोही वीरों के दिल का, मन का, स्वभाव का, इच्छा का बड़ा सुन्दर चित्र उन्होंने अपनी कविता में खींचा है। पहले ही वे कहते हैं। बोलो वीर चिर उन्नत मम शीर, शिर नेहरि आमारि, नत शिर ओई शिखर हिमाद्रीर।

यानी हे विद्रोही वीर! तुम एकदम यह कहते हो कि मैं कब से सिर उठाये खड़ा हूँ। मेरा ऊँचा सिर देखकर हिमालय ने भी अपना सिर शर्म के मारे झुका दिया।

आगे जाकर उसकी सख्ती और गरमी का वर्णन किया है कहीं वह मौत से (के साथ) नाच कर रहा है, कहीं वह संसार का एक ही बार सर्वनाश करने पर तुला हुआ है। वह बिजली की तरह चमकता है। वह संगीत की तरह मीठा है। विधवा, गुलाम, मजलूम, गरीब, भूखे और पीड़ित लोगों में बैठकर वह लगातार रोता रहता है। ऐसे विचित्र जीव की विचित्र महिमा का वर्णन करते हुए अन्त में विद्रोही के मुँह से कहलवाते हैं -

महा विद्रोही रणक्लान्त आमि शेई दिन हॅबो शान्त, जॅबे उत्पीड़ितेर क्रन्दन रोल आकाशे बाता से ध्वनिवे ना, अचारीर खड्ग कृपाण भीम रणभूमि रणिवे ना, विद्रोही रणक्लान्त आमि शेई दिन हॅवो शान्त!

अर्थात् मैं विद्रोही अब लड़ाई से थक गया हूँ और मैं भी उसी दिन शान्त हो जाऊँगा जिस दिन किसी दुःखी की आह या चीत्कार आकाश में जाकर आग न लगा सकेगी, यानी कोई दुःखी न रहेगा, और अब जालिमों, अत्याचारियों की भयानक तलवार मैदान में चलनी बन्द हो जायेगी, यानी बाकी ही न रहेंगी तब और तभी मैं शान्त हो सकूँगा और हो भी जाऊँगा।

ऐसे विचित्र विद्रोही जीव जो पूरे विश्व से टकरा जाते हैं और स्वयं को जलती आग में झोंक देते हैं, अपना ऐशो-आराम सब भूल जाते हैं और दुनिया की सुन्दरता, शृंगार में कुछ वृद्धि कर देते हैं और उनके बलिदानों से ही विश्व में कुछ प्रगति होती है। ऐसे ही वीर हर देश में हर समय होते हैं। हिन्दुस्तान में भी यही पूजनीय देवता जन्म लेते रहे हैं, ले रहे हैं और लेते रहेंगे। हिन्दुस्तान में से भी पंजाब ने ऐसे रत्न अधिक दिये हैं, बीसवीं शती के ऐसे ही सबसे पहले शहीद श्री मदनलाल ढींगरा हैं।

वे कोई लीडर तो थे नहीं कि उनके जीते जी उनका जीवन चरित्र छपकर दो-दो आने में बिक जाता। वे अवतार भी नहीं थे कि ज्योतिष से बताकर शोर मचा दिया जाता कि हम तो पहले ही समझ गये थे कि वे बहुत बड़े आदमी थे। उनकी किन्हीं ऐसी बातों का भी हमें पता नहीं कि हम लिख सकें कि 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात'। वह गरीब और एक बदकिस्मत विद्रोही था। उसके पिता ने उसे अपना पुत्र मानने से इन्कार कर दिया था। देशभक्त और खुशामदी सभी अखबारों में और उस समय के गर्म नेता विपिनचन्द्र पाल तक ने उन्हें कोस-कोसकर गालियाँ दी तो फिर बताओ इन हालात में आज बीस साल बाद उनके बारे में तथ्यों को फिर से इकट्ठा करने की कोशिश में किसी को कितनी सफलता मिल पायेगी? इन कठिनाइयों में हम आज उनका जीवन वृत्तान्त लिखने बैठ गये हैं। धीरे-धीरे हम लोग, उनका नाम भी न भूल जायें, यही सोचकर आज उनके बारे में जैसे भी तथ्य मिल सकते हैं, यह वृत्तान्त पाठकों के सामने रख रहे हैं।

आप शायद अमृतसर के रहने वाले थे। घर से अच्छे थे। बी. ए. पास कर पढ़ने के लिए इंग्लैंड चले गये। कहा जाता है कि वहाँ आप कुछ ऐय्याशी में फंस गये। यह बात यकीन से नहीं कही जा सकती, लेकिन यह कोई अनहोनी बात भी नहीं है। उनका मन बड़ा रसिक व भावुक था, इसबात का प्रमाण भी मिलता है इंग्लैंड के खुफिया विभाग के प्रसिद्ध जासूस श्री ई. टी. बुडहाल ने यूनियन जैक नामक साप्ताहिक अखबार में अपनी डायरी छापी थी। मार्च 1925 के अंक में उन्होंने श्री मदनलाल ढींगरा का हाल लिखा है। यह जासूस उनके पीछे लगाया गया था। वह लिखता है - ढींगरा एक असाधारण व्यक्ति था।ढींगरा का फूलों के प्रति जबरदस्त लगाव था। आगे जाकर उन्होंने लिखा है कि वे बाग के किसी सुन्दर कोने में जाकर बैठ जाते थे और घंटों तक फूलों को एक कवि की तरह मस्त होकर निहारते रहते और कभी उनकी आँखों से बड़ी तेज चमक कौंध उठती थी। उसी चमक को देखकर ई. टी. बुडहाल उस्ताद सिकलाहिन आगे लिखता है - उस व्यक्ति पर आँख रखनी चाहिए। किसी न किसी दिन वह कुछ धमाका करेगा, खैर। बात कर रहे थे कि वे शायद ऐय्याशी में फँस गये। उस कहानी के आगे यों है कि फिर स्वदेशी आन्दोलन का असर इंग्लैंड तक भी पहुँचा और जाते ही

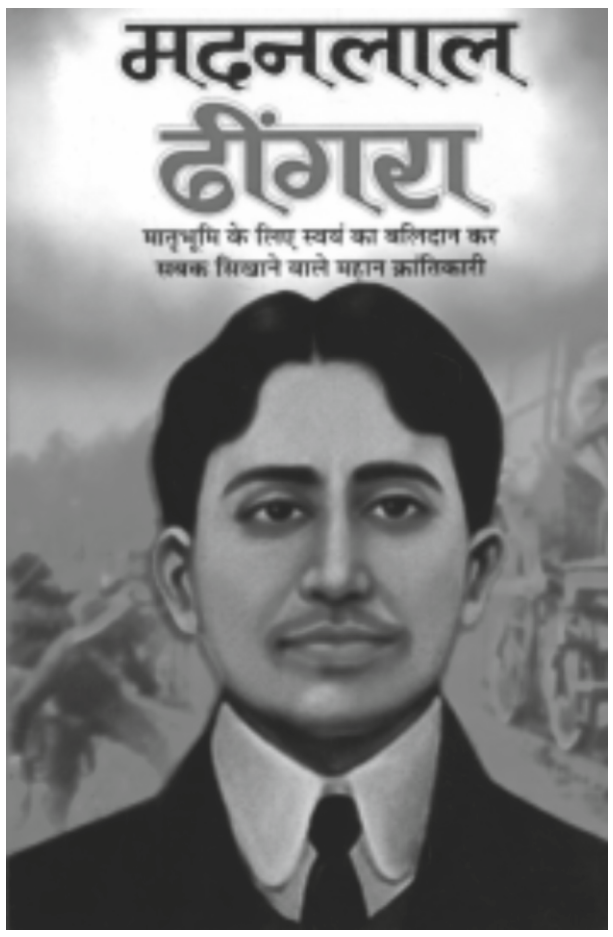

श्री सावरकर ने इण्डियन हाऊस नामक सभा खोल दी। मदनलाल भी उसके सदस्य बने।

उधर हिन्दुस्तान में खुले आन्दोलन को दबाने के कारण युग पलट लोगों ने खुफिया सोसाइटियाँ स्थापित कर लीं। यहाँ तक कि 1908 में अलीपुर की साजिश का मुकदमा बन गया। श्री कन्हाई और श्री सतेन्द्रनाथ को फाँसी मिल गई। धीरेन्द्र और उल्लासकर दत्त को भी उसी समय फाँसी की सज़ा सुनाई गई थी, ये खबरें इंग्लैंड में भी पहुँचीं और इन गरम नौजवानों में आग लग गई। कहते हैं कि एक दिन रात को श्री सावरकर और मदनलाल ढींगरा बहुत देर तक मशविरा करते रहे। अपनी जान तक दे देने की हिम्मत दिखाने की परीक्षा में मदनलाल को जमीन पर हाथ रखने के लिए कहकर सावरकार ने हाथ पर सुआ गाड़ दिया, लेकिन पंजाबी वीर ने आह तक न भरी। सुआ निकाल लिया गया। दोनों की आँखों में आँसू भर आये। दोनों एक-दूसरे के गले लग गये। आहा, वह समय कैसा सुन्दर था। वह अश्रु कितने अमूल्य व अलभ्य थे। वह मिलाप कितना सुन्दर, कितना महिमामय था। हम दुनियादार क्या जानें, मौत के विचार तक से डरने वाले हम कायर लोग क्या जानें कि देश की खातिर कौम के लिए प्राण देने वाले वे लोग कितने ऊँचे, कितने पवित्र और कितने पूजनीय होते हैं।

अगले दिन से ढींगरा फिर इंडियन हाऊस, सावरकर वाली सभा में नहीं गये और भारतीय विद्यार्थियों और विशेष खुफिया पुलिस का प्रबन्ध करने वाले और उनकी छोटी-मोटी आजादी को कुचलने वाले सर कर्जन वायली जो कि सेक्रेटरी आफ स्टेट फार इंडिया के एड. डी. कांप थे, द्वारा चलाई हिन्दुस्तानी विद्यार्थियों की सभा में जा शामिल हुए। यह देखकर इंडियन हाऊस वाले लड़कों को बड़ा जोश आया और उन्होंने उन्हें देशघातक, देशद्रोही तक कहना शुरू कर दिया, लेकिन उनका गुस्सा भी तो सावरकर ने यह कहकर शान्त किया कि आखिर उन्होंने हमारी सभा को चलाने के लिए भी तो सर तोड़ प्रयत्न किया था और उनकी मेहनत के फलस्वरूप ही हमारी सभा चल रही है, इसलिए हमें उनका धन्यवाद करना चाहिए। खैर। कुछ दिन तो चुपचाप गुजर गये।

1 जुलाई, 1909 को इम्पीरियल इंस्टीट्यूट के जहाँगीर हाल में एक बैठक थी। सर कर्जन वायली भी वहाँ गये हुए थे। वे दो और लोगों से बातें कर रहे थे कि अचानक ढींगरा ने पिस्तौल निकालकर उनके मुँह की ओर तान दी। कर्जन साहब की डर के मारे चीख निकल गई, लेकिन कोई इन्तजाम होने से पहले ही मदनलाल ने दो गोलियाँ उनके सीने में मारकर उन्हें सदा की नींद सुला दिया। फिर कुछ संघर्ष के बाद वे पकड़े गये दुनिया भर में सनसनी मच गई। सब लोग उन्हें जी भरकर गालियाँ देने लगे। उनके पिता ने पंजाब से तार भेजकर कहा कि ऐसे बागी, विद्रोही और हत्यारे को मैं अपना पुत्र मानने से इन्कार करता हूँ। भारतवासियों ने बड़ी बैठकें की। बड़े-बड़े भाषण हुए, बड़े-बड़े प्रस्ताव पास हुए। सब उनकी निन्दा में, पर उस समय एक वीर सावरकर थे, जिन्होंने खुल्लमखुल्ला उनका पक्ष लिया। पहले तो उनके खिलाफ प्रस्ताव न पास होने देने के लिए यह बहाना पेश किया कि अभी तक उन पर मुकदमा चल रहा है और हम उन्हें दोषी नहीं कह सकते। आखिर में जब इस प्रस्ताव पर वोट लेने लगे तो सभा के अध्यक्ष श्री विपिनचन्द्र पाल यह कह ही रहे थे क्या यह सभी की सर्वसम्मति से पास समझा जाये, तो सावरकर साहब उठ खड़े हुए और आपने व्याख्यान शुरू कर दिया। इतने में ही एक अंग्रेज ने इनके मुँह पर घूँसा मार दिया और कहा - ''देखो अंग्रेजी घूँसा कैसे ठिकाने पर पड़ता है।'' अभी वह कह ही रहा था कि (एक) हिन्दुस्तानी नौजवान ने उस अंग्रेज के सिर पर एक लाठी जड़ दी और कहा - ''देखा यारों हिन्दुस्तानी का डन्डा कैसे ठिकाने पर पड़ता है।'' शोर मच गया। बैठक बीच में छूट गयी। प्रस्ताव भी ऐसे ही रह गया, खैर।

मुकदमा चल रहा था। मदनलाल बड़े खुश थे। बड़े शान्त थे। सामने दर मर मौत खड़ी देखकर भी वे मुस्करा रहे थे। वह निर्भय थे। आहा! वे वीर विद्रोही थे। आपने अन्त में जो बयान दिया वह आपकी नेक दिली, आपकी देशभक्ति और योग्यता का बड़ा भारी सबूत है। हम उनके ही शब्दों में देते हैं। यह 12 अगस्त के डेली न्यूज में छपा था - ''मैं मानता हूँ कि मैंने उस दिन अंग्रेज का खून किया और कहता हूँ कि यह उन निर्दयता भरी सजाओं का मामूली सा बदला है जो कि हिन्दुस्तानी देशभक्त नौजवानों को फाँसी और कालेपानी की दी गई है। मैंने इस काम में अपने जमीर के सिवा किसी और की सलाह नहीं ली। अपने फर्ज के सिवाय किसी से साजिश नहीं की।

मेरा यह विश्वास है कि एक राष्ट्र जिसे विदेशी लोगों ने बन्दूकों से दबाया हो, वह हमेशा युद्ध की स्थिति में होता है और चूँकि हथियार छीनकर खुली लड़ाई असम्भव बना दी जाती है, मैंने छिपकर बिना बताये हमला किया है। क्योंकि हमें बन्दूकें रखने से मना किया जाता है, इसीलिए मैंने पिस्तौल खींच लिया और चला दिया।

मैं एक हिन्दू के रूप में समझता हूँ कि मेरे देश के साथ किया गया अन्याय ईश्वर का अपमान है, क्योंकि देश की पूजा श्री रामचन्द्र जी की पूजा है और देश की सेवा श्री कृष्ण जी की सेवा है। एक गरीब और मूर्ख, मेरे जैसे नौजवान के पास अपनी माता की सेवा में भेंट करने के लिए अपने रक्त के सिवाय और क्या हो सकता है? सो मैंने अपना रक्त माता के चरणों पर चढ़ाया है। इस समय यदि हिन्दुस्तान को किसी सबक की जरूरत है तो यह कि मरना कैसे चाहिए और इसे सिखाने का तरीका है कि हम खुद मर कर दिखायें। इसीलिए मैं मर रहा हूँ इसीलिए मुबारक हो शहीदाना मौत। यह लड़ाई तब तक जारी रहेगी जब तक हिन्दुस्तान और अंग्रेज दो राष्ट्र रहेंगे और इनका यह अस्वाभाविक गठबन्धन बना रहेगा। मेरी ईश्वर से आगे यही प्रार्थना है कि मैं फिर इसी माँ की गोद से जन्म लूँ और जब तक वह स्वतन्त्र न हो जाये और मानव समाज की पूर्ण सेवा और उन्नति के योग्य न बन जाऊँ, मैं यहीं जन्मता रहूँ और मरता रहूँ। बन्दे मातरम्।

16 अगस्त, 1910 का दिन भी इतिहास में याद रहेगा। उस दिन इंग्लैंड में हिन्दुस्तानी युग पलट पार्टी की आवाज गुंजाने वाला ढींगरा वीर अर्जुन मतवाली चाल चलता हुआ तख्ते पर जा चढ़ा था, श्रीमती एग्निस स्मेडले एक जगह इस घटना का जिक्र करती हुई लिखती है - आहा! सहारा देकर ले जाने वाले व्यक्तियों के हाथ पीछे झटककर वह कहने लगा - मैं मौत से नहीं डरता।' आहा! धन्य है मृत्युंजय! माँ से इतना प्यार! फाँसी के तख्ते पर खड़े हुए से पूछा जाता है - कुछ कहना चाहते हो? तो उत्तर मिलता है, 'वन्देमातरम्! माँ! भारत माँ! तुम्हें नमस्कार! वह वीर फाँसी पर लटक गया और हिन्दुस्तानियों को उनकी दाह क्रिया आदि कराने की इजाजत नहीं दी गई। धन्य था वह वीर! धन्य है उसकी याद! मुर्दा देश के अमूल्य हीरे को बारबार नमस्कार।

- जनज्ञान अगस्त, 2005 से साभार

आर्य समाज का विजय पर्व

भारतीय संघ में हैदराबाद राज्य का विलीनीकरण और आर्य समाज की भूमिका

वेद के अनुयायी और उसके प्रचारकों को सदैव ही संघर्ष करना पड़ा। इसी संघर्ष की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कड़ी 'हैदराबाद आर्य सत्याग्रह' (1939) है। कतिपय विद्वान् इस महान् एवं सफल सत्याग्रह को ''हैदराबाद में धर्मयुद्ध'' नामक संज्ञा से भी सम्बोधित करते हैं। वस्तुतः यह हमारे गौरवपूर्ण इतिहास का अति महत्वपूर्ण अध्याय है, जिसे पढ़कर हमारी आने वाली पीढ़ी गर्व से आत्माभिमान अनुभव करेगी।

हैदराबाद (तत्कालीन दक्षिण) आर्य सत्याग्रह वस्तुतः एक युद्ध था जिसे हैदराबाद राज्य में आर्य समाज के अधिकारों और वैदिक धर्म के प्रचार स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिए लड़ा गया था। प्रामाणिक तथ्यों के अनुसार आर्य समाज की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली द्वारा निरन्तर छः वर्ष तक वैध उपायों से इस समस्या के हल का प्रयत्न किया गया था, किन्तु जब ये सारे उपाय निष्फल हो गए, तब निजाम सरकार ने आर्य समाज को सत्याग्रह करने के लिए बाध्य कर दिया।

आर्य समाज के इस निर्णय से अन्य राजनैतिक दलों तथा साम्प्रदायिक संस्थाओं को बहुत पीड़ा हुई। इन्हें अपना नेतृत्व छिन जाने की वेदना सताने लगी। इस कारण आर्य समाज के इस सत्याग्रह को साम्प्रदायिकता का आवरण देने का असफल प्रयास किया। यह कटु सत्य है कि तुष्टीकरण ही इस देश के विभाजन का एक मात्र कारण सिद्ध हो चुका है। सत्यमेव जयते नानृतम्' और असत्यमेव न जयते' के मूल सिद्धान्त को मानने वाले उस आर्य समाज के सम्मुख न तो तुष्टीकरण रूपी नाग अपना फन ऊँचा कर पाया और न गिरगिट की तरह रंग बदलने वाली कुटिल चाल ही सफल हुई। इतना ही नहीं इन्हीं तत्वों के कारण आर्य समाज के प्रति लोगों की सहानुभूति को घटाने के स्थान पर बढ़ाया ही। आर्य समाज के नेताओं ने प्रारम्भ से ही इस बात को स्पष्ट कर दिया था कि यदि किसी हिन्दू राज्य में आर्य समाज पर इसी प्रकार की आपत्ति आती है जिस प्रकार की निजाम राज्य में आई थी, तो वे वहां भी इसी उपाय अर्थात् सत्याग्रह धर्म युद्ध का आश्रय लेते। आर्य समाज की घोषणा ने समाज और राष्ट्र के सम्मुख एक स्पष्ट और स्वच्छ विशाल मार्ग प्रस्तुत कर दिया। आर्य समाज ने दाहिने हाथ से कर्म किया तो बाएं हाथ में विजय श्री अपनी शोभा बढ़ाने लगी।

हां, जब आर्य समाज की सामनीति जब छः वर्ष पश्चात् भी सफल न हुई तब भी आर्य समाज निराश न हुआ। उन्होंने सर्वप्रथम समस्त आर्य जगत् की सम्मति ज्ञात करने के लिए दिसम्बर, 1938 के अन्तिम सप्ताह में शोलापुर में आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया। इस सम्मेलन का आयोजन इस 'नीति' के अनुसार था कि सम्भवतः निजाम सरकार के रवैऐ से आर्य समाज को सत्याग्रह न करना पड़े, किन्तु ऐसा कुछ नहीं हुआ और उस निजाम की पूंछ पूर्ववत् टेढ़ी ही रही। अन्ततः आर्य सम्मेलन शोलापुर को अपने समस्त निश्चयों के अनुसार सत्याग्रह की घोषणा करना पड़ी। इसके सर्वप्रथम सर्वाधिकारी श्री महात्मा नारायण स्वामी जी बनाए गए। इन समस्त निश्चयों में निश्चय क्र. 3 में स्पष्ट कहा गया था - 'राज्य अथवा कर्मचारियों को न तो तबलीग शुद्धि मतान्तरण में भाग चाहिए न उसे प्रोत्साहन करना चाहिए। न जेलों में हिन्दू कैदियों तथा स्कूलों में हिन्दू बच्चों को मुसलमान बनाया जाना चाहिए और न हिन्दू अनाथ, मुसलमानों के सुपुर्द किए जाने चाहिए।'' (सन्दर्भ - आर्य डायरेक्टरी, 1942, प्र. 213)

इस विशाल सत्याग्रह के संचालन हेतु 'सत्याग्रह समिति' नियत की गई। चूंकि इस आन्दोलन के सम्बन्ध में मिथ्या और भ्रमपूर्ण बातें फैलाई जा रही थीं, इसलिए उद्देश्य की पवित्रता के लिए सत्य और अहिंसा का विशुद्ध रूप से पालन अत्यावश्यक कहा गया।

धर्म युद्ध की प्रथम आहुति

- निश्चयानुसार पूज्य महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज ने दिनांक 29 अगस्त, 1939 को कतिपय सत्याग्रहियों के साथ हैदराबाद राज्य में प्रवेश किया। उन्हें प्रथमतः पकड़कर पुलिस निजाम राज्य के बाहर कर गई। किन्तु जब स्वामी जी ने पुनः वहां जाकर सत्याग्रह प्रारम्भ कर दिया, तब उन्हें पकड़कर एक साल के कारावास का दण्ड दिया गया। बस फिर क्या था, दावानल की भांति पूरे देश में जोश फैल गया और जनता बड़े से बड़े त्याग के लिए तैयार हो गई। आर्य समाज भी अंगड़ाई लेकर युद्ध के लिए ताल ठोंककर तैयार हो गया। सत्याग्रह के रहस्य को समझकर मार्च, 1939 में निजाम सरकार की ओर से समझौते की चर्चा प्रारम्भ हुई, किन्तु 9 अप्रैल, 1939 में शोलापुर में अन्तरंग सभा की आवश्यक बैठक हुई। इधर निजाम सरकार पीछे हट गई, इस कारण इसमें कोई विशेष गति नहीं आई।

उधर निजाम सरकार का दमन चक्र प्रबलता से घूमने लगा। ज्यों-ज्यों दमन चक्र बढ़ने लगा, त्यों-त्यों सत्याग्रह में उग्रता और तीव्रता बढ़ने लगी। इधर तुष्टीकरण की नीति वाले दलों ने इसके सम्बन्ध में अनेक भ्रांतियां फैलाना शुरू कर दीं। किन्तु जनता ने आर्य समाज की न्याय प्रियता, सत्यतापरक अहिंसा के मूल्य का आकलन करना शुरू किया, इस कारण 'तुष्टीकरण' की कुचालें निष्प्रभावी हो गई। अब इस धर्म युद्ध ने और भी व्यापकता प्रकट कर ली। कहते हैं - यह युद्ध इतना व्यापक और इतना प्रसिद्ध हो गया था कि उन दिनों देश की सार्वजनिक हलचलों में इसके सिवा और कोई हलचल सर्वोपरि न थी। सभी भाषायी तथा आंग्ल पत्रों में इस युद्ध के अतिरिक्त कोई चर्चा न थी। यह ध्यान रखने का तथ्य है कि देश के अग्रणियों की चिन्ता का कोई विषय था तो केवल यह युद्ध था।

यह युद्ध और इसकी चर्चा भारत की सीमा तक ही सीमित न रही वरन् समुद्र पार पार्लियामेण्ट के भवनों तक जा पहुंची।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की आज्ञाओं और निर्देशों को आर्यजनता ने बड़ी तत्परता और सम्मान के साथ ग्रहण किया। यह एक ऐतिहासिक वस्तु बन गई। जब युद्ध अपने चरम पर था, उस समय 2,000 सत्याग्रही शिविरों में पड़े हुए आदेश की प्रतीक्षा कर रहे थे। इनमें हिन्दू, सिक्ख, मुसलमान तथा ईसाई बन्धु थे। हमारे अनुशासन एवं संयम की सभी आंग्ल पत्र तथा भाषायी पत्र भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहे थे। विशेषकर हिन्दू जनता ने आर्य समाज की विपत्ति को अपनी विपत्ति समझा और उसके निवारणार्थ उन्होंने आर्य समाज तथा आर्य समाजियों के साथ कन्धे से कन्धा भिड़ाया और ऐसा कौन सा त्याग था जो उसने इस अवसर पर न किया हो।

'असत्यमेव न जयते' के अनुसार आर्य समाज रूपी श्रीकृष्ण का पांचजन्य शंख एक बार पुनः ध्वनित हो उठा और उसने विजय की घोषणा की। निजाम सरकार ने आर्य समाज के इस सत्याग्रह के सम्मुख घुटने टेक दिए और उसने 'सुधारों' की घोषणा की। यह घोषणा 20 जुलाई सन् 1939 को की थी। इसके पूर्व दिनांक 17 जुलाई, 1939 को निजाम सरकार ने अपना निर्णय प्रकट कर दिया था।

इस सत्याग्रह में कुल 10,579 सत्याग्रही जेल गए थे। इसके अतिरिक्त 2,000 सत्याग्रही वे थे जो 8-8-1939 से पूर्व केन्द्रों में पहुंच गए थे और आदेश की प्रतीक्षा कर रहे थे।

इस प्रकार आर्य समाज द्वारा छेड़ा गया यह धर्म युद्ध जो कि अज्ञान, अन्याय और अभाव के विरूद्ध प्रारम्भ हुआ था, परमात्मा की कृपा सत्याग्रहियों के तप-त्याग तथा महान बलिदानियों के कारण सुखद अन्त के रूप में विजय श्री को प्राप्त कर सका। इन सभी श्रेष्ठ आत्माओं के प्रति आभार तथा प्रणाम।

- मनुदेव अभय, 'सुकिरण' अ-193,
सुदामानगर,
इन्दौर, (मध्य प्रदेश)

हैदराबाद के आर्य शहीदों को

श्रद्धांजलि

श्रद्धांजलि अर्पण करते हैं हम, करके उन वीरों का मान।
धार्मिक स्वतन्त्रता पाने को, किया जिन्होंने निज बलिदान।।
परिवारों के सुख को त्यागा, देश के अनेकों वीरों ने।।
कष्ट अनेकों सहन किए, पर धर्म न छोड़ा वीरों ने।।
ऐसे सभी धर्मवीरों के आगे शीश झुकाते हैं।
उनके उत्तम गुणगान को, हम निज जीवन में लाते हैं।।
अमर रहेगा नाम जगत में, इन वीरों का निश्चय से।
उनका स्मरण बनायेगा फिर वीर जाति को निश्चय से।।
करें कृपा प्रभु आर्य जाति में, कोटि कोटि हो वीर।
धर्म देश हित जोकि खुशी से प्राणों की आहुति दे वीर।।
जगदीश को साक्षी जान कर यही प्रतिज्ञा करते हैं।
इन वीरों के चरण चिन्ह पर चलने का व्रत करते हैं।।
सर्व शक्ति दे बल ऐसा, धीर-वीर सब आर्य बनें।
पर उपकार परायण निश दिन शुभ गुणकारी आर्य बनें।।

धर्मवीर नामावली

श्यामलाल जी, महादेव जी, राम जी श्री परमानन्द।
माधवराव, विष्णु भगवन्ता, श्री स्वामी कल्याणानन्द।।
स्वामी सत्यानन्द, महाशय मलखाना, श्री वेदप्रकाश।
धर्म प्रकाश, रामनाथ जी पांडुरंग, श्री शान्ति प्रकाश।।
पुरुषोत्तम जी, ज्ञानी लक्ष्मण राव, सुनेहरा वैंकटराव।
भक्त अरुणाराम जी, नन्हूं सिंह जी, गोविन्द राव।।
मदन सिंह जी, रतिराम जी, मान्य सदाशिव ताराचन्द।
श्रीयुत छोटेलाल, अशर्फीलाल तथा श्री फकीर चन्द।।
माणिकराव, भीमरावजी, महादेव जी, अर्जुनसिंह।
सत्यनारायण, वैजनाथ, ब्रह्मचारी दयानन्द, नरसिंह।।
राधाकृष्ण सरीखे निर्भय अमर हुए इन वीरों का।
स्मरण करें विजयोत्सव के दिन सब ही वीरों धीरों का।।

'रक्षाबन्धन' पर्व पर विशेष

स्वामी श्रद्धानन्द जी की कलम से –

रक्षाबन्धन का संदेश

(गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के संस्थापक, स्वाधीनता सेनानी, अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने 3 सितम्बर, 1920 को लिखे इस लेख में बताया है कि प्राचीन भारत में नारी जाति का बहुत सम्मान था। आज के युग में भी इसी भावना के संपोषक की आवश्यकता है। जब व्यक्ति मर्यादा पुरुषोत्तम रामकी तरह तथा पाण्डवों की भांति नारी रक्षा के लिए सन्नद्ध हो तथा माताओं व बहिनों का आदर सत्कार करें। यह लेख आज भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। – सम्पादक)

माता का पुत्र पर जो उपकार है उसकी संसार में सीमा नहीं। यही कारण है कि हर समय और हर देश में मातृशक्ति का स्थान अन्य शक्तियों से ऊँचा समझा जाता है। जहां ऐसा नहीं है वहां सभ्यता और मनुष्यता का अभाव समझा जाता है।

जब वह मातृशक्ति ऊँचे स्थान पर रहती है तो वह श्रद्धा और भक्ति की अधिकारिणी होती है। और जब वह बराबरी पर आती है तो बहन के रूप में भाई पर प्रेम और रक्षा के अन्य साधारण अधिकार रखती है। एक सुशिक्षित सभ्य देश में देश की माताएं पूजी जाती हैं, बहनें प्रेम और रक्षा की अधिकारिणी समझी जाती हैं और पुत्रियाँ भावी माताएँ और भावी बहनें होने के कारण उस चिन्ता और सावधानता से शिक्षण पाती हैं, जो बालकों को भी नसीब नहीं होती। यह एक उन्नत और सभ्य जाति के चिन्ह हैं।

भारत के स्वतन्त्र सुन्दर प्राचीन काल में माताओं, बहनों और पुत्रियों का यथायोग्य पूजन रक्षण और शिक्षण होता था। यही कारण था कि भारत की महिलाएँ प्रत्युत्तर में पुरुषों को आशीर्वाद देती थीं, उन्हें नाम की अधिकारिणी बनाती थीं, उन्हें अपनी जन्म घुट्टी के साथ वीरता और स्वाधीनता का अमृत पिलाती थीं। उन्हीं पूजा पाई हुई माताओं का अशीर्वाद था जिस कारण भारतवासियों में आत्मसम्मान था। पाण्डव वीर थे, पर यह न भूलना चाहिए कि उन्हें अपना 'पांडव' यह उपनाम उतना प्यारा न था, जितना प्यारा 'कौन्तेय' था। राम का सबसे प्यारा नाम 'कौशल्या नन्दन' है। वे वीर माता के नाम से नाम कमाने को अपमान न समझते थे – उसे अधिक अच्छा समझते थे, और यही कारण था उन पर माताओं का आशीर्वाद फलता था। राजपूतों में स्त्री जाति की रक्षा करना आवश्यक धर्म समझा जाता था। रक्षाबन्धन उसका एक अधूरा शेष है। यह दिन बहिन और भाई देश की अबलाओं और वीर पुरुषों के परस्पर रक्षा–रक्षक सम्बन्ध को दृढ़ करने का दिन है। जब भारत में स्वाधीनता आत्म सम्मान और यश का कुछ भी मूल्य समझा जाता था, तब देश के नवयुवक अपनी देश बहिनों की मानमर्यादा की रक्षा के लिए प्राणों की बलि देने में अपना अहोभाग्य समझते थे।

परन्तु आज क्या दशा है? पाठक यह समझकर विस्मित नहीं हों कि हम अब स्त्री शिक्षा और विधवा विवाह का रोना लेकर बैठेंगे। यह रोना रोते–रोते आधी सदी बीत गई और अब उसका असर देश के सभी विचारशीलों पर है। हम तो आज अपने पाठकों को केवल यह अनुभव करना चाहते हैं कि स्त्री जाति के प्रति भारतवासियों के जो वर्तमान भाव हैं वह कितने हीन और

तुच्छ हैं। यह याद रखना चाहिए कि जो जाति माताओं को इतना हीन और तुच्छ समझती हैं, वह दासता की ही अधिकारिणी है। हमारे हरेक व्यवहार में हमारे शहरों और गांव के हरेक कोने में हमारे असभ्य और सभ्य नागरिकों के मुंह में दिन–रात माताओं और बहनों का नाम लेकर गालियाँ निकलती हैं। लड़ाई आदमी से, गाली और बेइज्जती माँ और बहन के लिए। यदि किसी दूसरे को बदनाम करना है तो उसका सबसे सरल उपाय उसकी बहिन या लड़की को बदनाम करना समझा जाता है। सामाजिक स्थिति में स्त्रियों को अछूतों से बढ़कर गिना जाता है। हमारी सभा सोसाइटियों के योग्य उन्हें नहीं समझा जाता।

स्त्री जाति पर शत्रु का आक्रमण एक ऐसी घटना हुआ करती थी कि उस पर हमारे वीर पुरुषों के ही नहीं, साधारण लोगों के भी खून उबल पड़ते थे। राम ने रावण को मारा, अपनी स्त्री की रक्षा के लिए। पांडवों ने कुरुकुल का संहार किया। द्रौपदी के अपमान का बदला लेने के लिए। राजपूतों में कितने युद्ध केवल महिलाओं के मान रक्षा के लिए हुए और फिर महिलाएँ भी अपनी निज बहिन व बेटी नहीं अपितु जाति की। आज हम लोग अपनी माताओं और बहिनों के लिए गन्दी से गन्दी गालियाँ सुनते हैं और चुप रहते हैं। विदेशी लेखक और समाचार पत्रों और ग्रन्थों में हमारी स्त्री जाति के लिए निरादर सूचक शब्द लिखते हैं और हम उन्हें पढ़कर चुप रहते हैं। इतना ही नहीं, पिछले साल की मार्शलता की घटनाओं को याद कीजिए। एक विदेशी अफसर आता है और भारत पुत्रियों और माताओं को गांव से बाहर बुलाता है, उनका पर्दा अपनी छड़ी से उठाता है, उनपर थूकता है, उन्हें गन्दी गालियाँ देता है और भारतवासी हैं, जो इस पर प्रस्ताव पास करते हैं। क्या किसी जीवित जाति में स्त्रियों पर ऐसा अत्याचार सहा जा सकता था? क्या किसी जानदार देश में ऐसा अपमान करने वाला व्यक्ति एक मिनट भी रह सकता है? हम पूछते हैं कि क्या राम के समय के क्षत्रिय, क्या भीम और अर्जुन, क्या हम्मीर और सांगा के समय के राजपूत और क्या शिवाजी के मराठे ऐसे जातीय अपमान को क्षणभर भी सहते? क्या भारत की भूमि ऐसे तिरस्कार के पीछे भी शान्त रहती? कभी नहीं, उसमें वह भूडोल आता जिसमें शासकों का दर्प और पापी का पाप चकनाचूर हो जाता। पर हाय! यह आत्मसम्मान का भाव इस अभागे देश में बाकी नहीं रहा। माताओं और बहनों के लिए वह अतुल भक्ति और प्रेम का भाव अब भारतवासियों में नहीं रहा।

रक्षाबन्धन उन्हीं भावों का चिन्ह था। आज भी वह कुछ सन्देश रखता है। आज भी वह अबला की पुकार देशवासियों के कानों में डाल सकता है – पर यदि कोई सुनने वाला हो। जिनके कान हैं वह रक्षाबन्धन केसन्देश को और अबलाओं की पुकार को सुन सकते हैं। यदि वह भी नहीं सुन सकते, तो फिर हे देशवासियों! अपने भविष्य से निराश हो जाओ। तुम्हारे जीने से न कोई भला है और न उसकी आशा है। जिस जाति के पुरुष अपनी माताओं, बहिनो और पुत्रियों के मान की रक्षा नहीं कर सकते, वह जाति इस भूतल से धुल जाने के ही योग्य है।

– श्रद्धा, 3 सितम्बर 1920 से उद्धृत

पृष्ठ 1 का शेष

श्रावणी पर्व (वेद प्रचार सप्ताह) हर्षोल्लास के साथ समारोह पूर्वक मनायें

फिर आर्य समाज की तरफ सबकी निगाहें हैं और आर्य समाज एक बार फिर अपने चिन्तन और शक्ति से अपनी श्रेष्ठता और उपयोगिता सिद्ध कर सकता है।

जीवन निर्माण में स्वाध्याय का महत्त्वपूर्ण स्थान है। वैदिक साहित्य स्वाध्याय की महिमा का बखान करते नहीं थकते। चारों आश्रमों में स्वाध्याय करने का विधान है। वेद का प्रचार तथा वैदिक मूल्यों का स्थापन आर्य समाज की गतिविधियों में प्राथमिक महत्त्व रखते हैं। इस वर्ष 15 अगस्त, 2019 को रक्षा बन्धन तथा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी 24 अगस्त, 2019 को है। दोनों पर्वों के बीच का समय वेद प्रचार सप्ताह या स्वाध्याय पर्व के रूप में मनाया जाता है। इस पर्व को अत्यन्त हर्षोल्लास पूर्वक मनाया जाना चाहिए। जहाँ हम पारम्परिक रूप से यह पर्व मनाते हैं वह तो मनायें ही साथ ही अपने क्षेत्र के बुद्धिजीवी वर्ग को भी अपने कार्यक्रमों में अवश्य आमंत्रित करें और उनको आर्य समाज की विचारधारा से अवगत करायें। अपने कार्यक्रमों में युवाओं को अधिक से अधिक संख्या में लाने का प्रयास करें और उन्हें आर्य समाज के साथ जोड़ने के लिए विशेष कार्यक्रमों का आयोजन भी करें। वेद प्रचार सप्ताह के दिनों में जन-जागरण का कार्य विशेष महत्त्व रखता है। अतः प्रातःकाल भारी संख्या में महिलाओं, पुरुषों तथा बच्चों के साथ निकलकर ओ३म् के झण्डे हाथ में लिये हुए महर्षि का गुणगान करें तथा अपने कार्यक्रमों में आम जनता को आने के लिए आमंत्रित भी करें। अपने विशेष यज्ञों में धार्मिक पाखण्ड और अन्धविश्वास को मिटाने का संकल्प लेते हुए आहुति अर्पित करें।

आर्य समाज का मुख्य कार्य वेद प्रचार, मानव निर्माण तथा सत्य धर्म का प्रचार करना है। अतः वेदमय होकर दयानन्द के भक्तों आगे बढ़ो और वेद का प्रचार करो। इस वेद प्रचार सप्ताह के अवसर पर आर्य समाज के प्रत्येक सदस्य के पास वेद पहुँचाने का विशेष यत्न करें और अपने मित्रों, सम्बन्धियों को प्रेरित करें कि वे वेद का स्वाध्याय नियमित करें।

स्वामी जी ने कहा कि यदि हम अपने जीवन में श्रेष्ठता प्राप्त करना चाहते हैं तो हमें वेद का पठन-पाठन तथा श्रवण और प्रवचन करना होगा। आज व्यक्ति का चारित्रिक पतन इसलिए हो रहा है कि लोगों ने वेद को भुला दिया है। ऋषि-मुनियों की अनमोल शिक्षाओं को दर किनार कर दिया है। स्वामी जी ने कहा कि अपने आपको जीवन्त और प्राणवान बनाने के लिए संघर्ष की आवश्यकता होती है क्योंकि संघर्ष से विकास होता है और आन्दोलनों के द्वारा ही जन-जागृति समाज में फैलाई जा सकती है। आज समय आ गया है कि प्रत्येक क्षेत्र में आर्य समाज को कदम बढ़ाने व फैलाने होंगे। न केवल धर्म अपितु राजनीति, समाज एवं शिक्षा प्रत्येक क्षेत्र में आज परिवर्तन की आवश्यकता है। स्वामी जी ने कहा कि आज आम जन किंकर्तव्य विमूढ़ हो गये हैं, उनकी समझ में नहीं आ रहा है कि हम क्या करें कहां जायें। ऐसे समय में आर्य समाज ही उनका सम्बल बन सकता है। आर्य समाज के प्रत्येक सदस्य को जागरण अभियान चलाना होगा, लोगों की समस्याओं को सुलझाना होगा, प्रत्येक आर्य समाज को समस्या निवारण केन्द्र बनाना होगा तथा लोगों का विश्वास जीतना होगा।

स्वामी जी ने कहा कि देश में जिस तेजी से धार्मिक पाखण्ड बढ़ा है उसमें सामाजिक एकता, धार्मिक एकता तथा राष्ट्रीय एकता तीनों के लिए गम्भीर खतरा पैदा हो गया है। धर्म और अध्यात्म के नाम पर इन पाखण्डियों की दूकानदारी तथा इनका व्यवसाय फलता-फूलता रहे इनकी ऐषणायें फलीभूत होती रहें इसलिए ये विभिन्न प्रकार के पाखण्डों को बढ़ावा देते हैं। दोहरा चरित्र जीने वाले इन पाखण्डियों का परदे के पीछे का रूप अत्यन्त भयावह होता है। इनसे देश को मुक्त कराना ही होगा। स्वामी जी ने आर्यों का आह्वान करते हुए कहा कि धार्मिक पाखण्ड और सामाजिक बुराईयों के विरूद्ध पूरे देश में अभियान चलाया जाये तथा इन सामाजिक बुराइयों को दूर करने में युवा शक्ति जागरूक होकर सामाजिक चेतना जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाये।

स्वामी जी ने कहा कि इस बार के कार्यक्रमों में वेद कथा के साथ-साथ लोगों को इन समस्त बुराईयों के विरुद्ध जागृत करने का विशेष प्रयास किया जाना चाहिए।

स्वामी जी ने कहा कि वेद प्रचार सप्ताह के कार्यक्रमों में विशेष ध्यान देने योग्य है कि मानव मूल्यों की पुनः स्थापना करने के लिए एक सामूहिक सोच को विकसित किया जाये और यह कार्य वेद के आधार पर ही हो सकता है क्योंकि वेद पूर्णतया सार्वभौमिक और परमात्मा की सत्य वाणी है। और वेदों का जीवन दर्शन ही आज के जीवन तथा जगत को सत्य, धर्म, न्याय, सुख, शान्ति और सच्चा आनन्द दे सकता है। समस्त आर्यजन उत्साहपूर्वक इस वेद प्रचार सप्ताह को मनाने का संकल्प लें यही कामना है।

आर्य समाज तथा सार्वदेशिक सभा की गतिविधियों की जानकारी प्राप्त करने के लिए सार्वदेशिक सभा के मुखपत्र 'वैदिक सार्वदेशिक' के स्वयं ग्राहक बनें तथा अन्य व्यक्तियों को ग्राहक बनाने का प्रयास करें। अपने आर्य समाज के कार्यक्रमों की सूचना चित्र सहित प्रकाशित करवाने के लिए अवश्य भेजें जिससे आर्य जगत की गतिविधियों का प्रचार-प्रसार हो तथा अन्यों को प्रेरणा प्राप्त हो।

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के तत्वावधान में

'सत्यार्थ प्रकाश तेलुगु' संस्करण का लोकार्पण समारोह सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के तत्वावधान में सत्यार्थ प्रकाश के तेलुगु संस्करण का लोकार्पण समारोह ठाकुर लक्ष्मण सिंह जी सभा प्रधान की अध्यक्षता में, मुख्य अतिथि पूर्व केन्द्रीय मंत्री बंडारु दत्तात्रेय के करकमलों के द्वारा सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य जगत के विद्वान, साधु– संत, गुरुकुलों के आचार्य व आचार्या आदि उपस्थित थे। इस अवसर पर विशेष अतिथि के रूप में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के महामंत्री व दयानंद गुरुकुल, पूठ के आचार्य स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी उपस्तिथ थे।

सभा का संचालन करते हुए सभा मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य ने महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत कालजयी ग्रंथ का विशेष रूप से परिचय कराया। उन्होंने कहा कि इस पुस्तक ने हजारों–हजारों लोगों को प्रेरित किया है। संसार की लगभग 20 भाषाओं में सत्यार्थ प्रकाश का अनुवाद हुआ है। यह पुस्तक समाज के घोर अंधकार के समय में पाखण्ड के खिलाफ तथा सभी प्रकार के मतमतान्तरों में फैले अंधविश्वास के ख़िलाफ़ तथा तार्किक ढंग से और विज्ञान सम्मत ढंग से वेद पर आधारित लिखा गया यह ग्रंथ अमूल्य है।

इस अवसर पर स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती जी ने कहा कि सन्तान का निर्माण माता करती है, इसलिये माता निर्माता भवति कहा गया है। भारतीय समाज में सन्तान निर्माण पर वेदों द्वारा प्रतिपादित संतान निर्माण विज्ञान को समझने और समझाने की जरूरत है तभी समाज और राष्ट्र का निर्माण संभव है।

मुख्य अतिथि पूर्व केंद्रीय मंत्री श्री बंडारु दत्तात्रेय जी ने सत्यार्थ प्रकाश पुस्तक का लोकार्पण करने के बाद उपस्थित सारे विद्वानों का सम्मान किया, उसके पश्चात् सभा को संबोधित करते हुए कहा कि सत्यार्थ प्रकाश एक अद्भुत ग्रंथ है। राष्ट्र निर्माण में स्वामी दयानंद सरस्वती जी, उनके द्वारा रचित ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश और आर्य समाज ने आजादी के आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सांस्कृतिक पुनर्जागरण का शंखनाद तथा धार्मिक, सामाजिक सुधार का आंदोलन मात्र आर्य समाज ने किया है। आर्य समाज न होता तो निज़ाम से हैदराबाद की मुक्ति भी सम्भव नहीं थी। आर्य समाज एक विचार का आंदोलन है। उन्होंने कहा कि आर्य समाज की आवश्यकता कल थी, आज है और आगे भी रहेगी। उन्होंने यह भी कहा कि गुरुकुल घटकेश्वर की सम्पति आर्य समाज को दिलाई जाएगी।

स्वामी धर्मेश्वरानंद जी ने कहा कि सामान्य से सामान्य गांव का किसान भी आर्य समाज की शिक्षाओं से प्रभावित था। वह अपने रोज़मर्रा के जीवन से समय निकालकर घूम–घूम कर सत्यार्थ प्रकाश की प्रतियों को बेचा करता था। कई लोगों को सत्यार्थ प्रकाश ग्रंथ ने अत्यधिक प्रभावित किया है इसे पढ़कर लोगों ने अपना जीवन समाज को समर्पित किया तथा साधु–संत बन गए। आज की आवश्यकता है कि हजारों हजारों की संख्या में सत्यार्थ प्रकाश का वितरण किया जाये, तभी समाज में व्याप्त पाखंड को समाप्त किया जा सकता है। माता निर्मल योग भारती जी ने कहा कि सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं में से एक–दो शिक्षाओं पर आचरण कर लिया जाय तो जीवन सुधर सकता है।

इस अवसर पर तेलुगु के महान कवि श्री मचिराजु शिवरामराजु द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन पर लिखित प्रबंध काव्य (तेलुगु में) ग्रंथ का भी लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर डॉ. चंद्रया जी कृत 'महात्मा ज्योतिबा फुले' ग्रंथ का भी लोकार्पण किया गया।

लोकार्पण समारोह के इस अवसर पर प्रान्तीय विद्वानों में स्वामी ब्रह्मानंद जी, माता निर्मल योग भारती जी, आचार्य उदयन जी, आचार्य भवभूति जी, आचार्य आनंद प्रकाश जी, आचार्या नीरजा जी, डॉ. वसुधा शास्त्री जी, आचार्य कोडूरी सुब्बाराव जी, पंडित चलवादी सोमया जी, श्रीमती मचिराजु अमृता कुमारी जी, प्रसिद्ध उद्योगपति श्री दयानन्द गौरी जी, श्रीमती मीरा गौरी जी, श्री रामचन्द्रा रेड्डी जी आदि उपस्थित थे। सभा का संचालन सभा मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य ने किया।

कार्यक्रम का वैदिक प्रार्थना तथा दीप प्रज्ज्वलित करके स्वामी धर्मेश्वरानंद जी मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश एवं स्वामी ब्रह्मानंद जी, आचार्य आनंद प्रकाश जी, आचार्य उदयन जी आदि ने समारोह का उद्घाटन किया। बाद में राष्ट्रगीत वन्देमातरम् गाया गया। अंत मे विद्वानों और दानदाताओं का सभा की ओर से सम्मान किया गया। सभा प्रधान ठाकुर लक्ष्मण सिंह जी ने अध्यक्षीय भाषण में सत्यार्थ प्रकाश के तेलुगु संस्करण की भूरि– भूरि प्रशंसा की तथा सभी को चिंतन, मनन व आचरण करने के लिए प्रेरित किया। सभा उपप्रधान श्री हरिकिशन जी वेदालंकार ने सभी महानुभाओं को धन्यवाद समर्पित किया। तत्पश्चात् शान्तिपाठ के उपरान्त कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

– प्रो. विठ्ठल राव आर्य, मंत्री सभा

ऋषि तर्पण– वेद रक्षा व्रत ग्रहण पर्व

– वेदप्रिय शास्त्री

'ऋषयों मंत्र दृष्टारः' अर्थात् मनुष्यों की वह श्रेणी जो मंत्र–दर्शन–सामर्थ्य से युक्त होती है, ऋषि कहलाती है। यह सामर्थ्य इनमें या तो जन्मसिद्ध होता है या फिर प्रयत्नसिद्ध। इस सामर्थ्य से ये लोग सृष्टि के सभी पदार्थों का ज्ञान हस्तामलकवत् साक्षात् कर लेते हैं। प्रत्येक सृष्टि की आदि में मानवों के उद्धार को लक्ष्य करके परमेश्वर इन ऋषियों के माध्यम से ही ज्ञान और भाषा का प्रकाश करता है। इन ऋषियों की तीन श्रेणियाँ होती हैं।

1. दिव्यर्षि 2. श्रुतऋशि 3. कृत प्रयत्न ऋषि

आचार्य यास्क ने इनका वर्णन इस प्रकार किया है–

''साक्षात्कृतधर्माण ऋषयो बभूवुः। तेऽवरेभ्योऽसाक्षात्कृत धर्मभ्य उपदेशेन मन्त्रान्सम्प्रादुः। उपदेशाय ग्लायन्तोऽवरे बिल्मग्रहणायेमं ग्रन्थं समाम्नासिषुर्वेदं च वेदांगानि च''।।

– निरुक्त 1/20

इन ऋषियों ने अपने पवित्र अन्तःकरण में प्रादुर्भूत परमेश्वर के दिव्य ज्ञान एवं दिव्य भाषा का मानवों में सर्वत्र प्रचार–प्रसार किया। परमेश्वर की उपासना और तपस्या के द्वारा वेदमंत्रों के अर्थों का साक्षात्कार करके लोक में प्रकाशित किया। वेद में इसका उल्लेख इस प्रकार है–

भद्रमिच्छन्त ऋषयः स्वर्विदस्तपो दीक्षामुपनिषेदुरग्रे।
ततो राष्ट्रं बलमोजष्च जातं तदस्मै देवा उपसंनमन्तु।।

– अथर्ववेद 19/41/1

इन्हीं ऋषियों ने वेदविरोधी जनों द्वारा वेदों पर किए गये प्रहारों और आक्षेपों का मुँहतोड़ उत्तर देने में समर्थ शास्त्रों का प्रणयन करके वेदों की और वैदिक समाज की रक्षा भी की। उनका किया गया यह श्रम और तप उनके स्वयं के लिए न होकर भावी पीढ़ी के मानवों के लिए ही था। अतः मनुष्यमात्र के ऊपर उनका इतना ऋण है कि उसे चुकाया नहीं जा सकता। कितनी ही कृतज्ञता व्यक्त की जाय वह न्यून ही होगी।

इसलिए उन्होंने जिस कामना और भावना से, जिस पवित्र उद्देश्य से निज जीवन को समर्पित किया, हमें भी उसी के अनुसार उनके द्वारा प्रदत्त ज्ञान वेद–वेदोगादि की रक्षा तथा प्रचार–प्रसार करना चाहिए, तभी उनका श्रम सार्थक होगा और तभी मानवमात्र का कल्याण भी हो सकेगा। इसके लिए हम आवश्यक तप और दीक्षा को स्वीकार करें और आलस्य प्रमाद त्याग कर प्राणपण से कार्य करने का व्रत लें। यही ऋषि तर्पण है।

वेदों की रक्षा और ऋषियों का ऋण चुकाने का एक ही उपाय है, वह है 'स्वाध्याय और प्रवचन' अर्थात् अध्ययन और अध्यापन। राजर्षि मनु ने इसे ही ऋषियज्ञ और ब्रह्मयज्ञ की संज्ञा प्रदान कर पंचमहायज्ञों में से प्रथम स्थान दिया है। यथा–

ऋषियज्ञं देवयज्ञं भूतयज्ञं च सर्वदा।
नृयज्ञं पितृयज्ञं च यथाशक्ति न हापयेत्।।

– मनु. 4/21

आगे कहा– स्वाध्यायेनार्चयेत् ऋषीन्।

– मनु. 3/81

अर्थात् स्वाध्याय के द्वारा ऋषियों का अर्चन करें। पुनः कहाः– 'अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः' अर्थात् पढ़ाना ब्रह्मयज्ञ है।

शतपथ कहता है 'स्वाध्यायो वै ब्रह्म यज्ञः' अर्थात् स्वाध्याय ही ब्रह्मयज्ञ है। इसीलिए गुरुकुलों में शिक्षा समाप्ति पर आचार्य स्नातकों को दीक्षान्त उपदेश में अन्य उपदेशों के साथ यह भी कहता था कि– 'स्वाध्यायान्मा प्रमदः'। 'स्वाध्याय प्रवचनाभ्याम् न प्रमदितव्यम्' (तैत्तिरीयोपनिशद् 11/1) शतपथकार स्वाध्याय को परमश्रम कहता है–

'ये ह वै के च श्रमाः। इमे द्यावापृथिवीऽअन्तरेण स्वाध्यायो हैव तेषां परमता काष्ठा'।।

– शत.11–5–7–2

एक स्थान पर कहता है– **यदि ह वा अप्यभ्यक्तः। अलंकृतः सुहितः सुखे शयने शयानः स्वाध्यायमधीतऽआ हैव स नखाग्रेभ्यस्तप्यते।**

– शत.11–5–7–4

अर्थात् यदि कोई तेल फुलेल और अलंकारों से सज–धज कर आसन पर बैठ अथवा सुखपूर्वक लेटकर भी स्वाध्याय करता है, तो समझो वह नखाग्र तक से परम तप कर रहा है।

मनु महाराज ने भी ऐसा ही कहा है–

आ हैव स नखाग्रेभ्यः परमं तप्यते तपः।
यः स्रग्व्यपि द्विजोऽधीते स्वाध्यायः शक्तितोऽन्वहम्।

– मनु. 2/167

अर्थात् सुगन्धित पुष्पमाला धारण करके भी जो द्विज स्वाध्याय करता है व नखाग्र पर्यन्त तप करता है। क्योंकि–

वेदाभ्यासो हि विप्रस्य तपः परमिहोच्यते।।

– मनु. 2/166

वेदाभ्यास ही ब्राह्मण का परम तप कहा जाता है।

महाभाष्यकार ने तो इसे ब्राह्मण का निष्कारण धर्म बताया है यथा– **'शडंगो वेदोऽध्येयः ज्ञेयश्च ब्राह्मणस्य निष्कारण धर्मः।।'** अर्थात् छः अंगो सहित वेदों का अध्ययन और अर्थज्ञान ब्राह्मण का अकारण ही धर्म है, जिसका पालन उसके लिए अनिवार्य है। मनु कहते हैं–

'सर्वान्परित्यजेदर्थान्स्वाध्यायस्य विरोधिनः।।'

– मनु. 4/17

अर्थात् स्वाध्याय विरोधी सभी अर्थों को त्याग देना चाहिए।

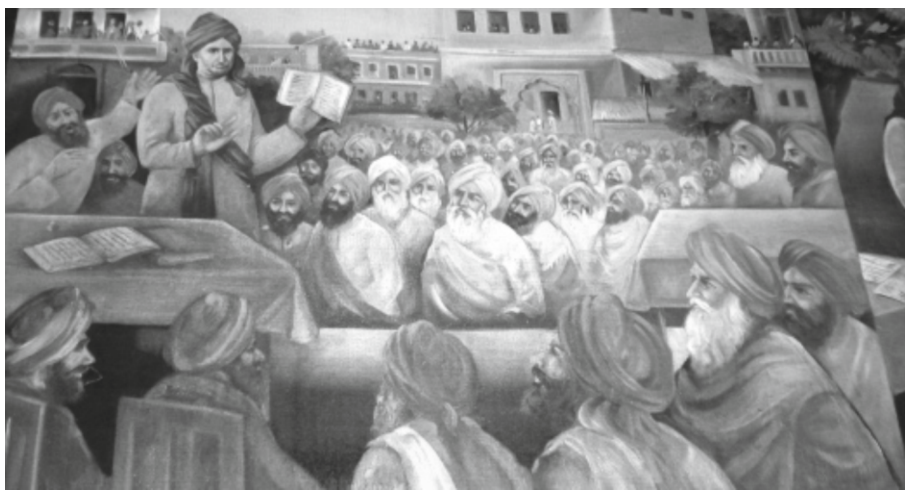

मनु ने गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यासी के लिए भी स्वाध्याय का विधान किया है। देखिए गृहस्थ के लिए–

बुद्धिवृद्धिकराण्याषु धन्यानि च हितानि च।
नित्यं शास्त्राण्यवेक्षेत निगमांष्चैव वैदिकान्।।

– मनु. 4/19

अर्थात् बुद्धि वृद्धिकर, धन और हित के शीघ्र साधक शास्त्र हैं, उनका नित्य पठन, श्रवण व मनन करें जिनका वेद में विधान है। वानप्रस्थ के लिए कहा– **'स्वाध्याये नित्ययुक्तः स्यात्।।**

अर्थात् नित्य स्वाध्याय में लगा रहे। संन्यासी के लिए कहा–

'सन्यसेत् सर्वकर्माणि वेदमेकं न सन्यसेत्'।।

अर्थात् सब कर्मों से संन्यास ले परन्तु एक वेद ही है जिससे कभी संन्यास न ले। महर्षि दयानन्द ने कहा– 'वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।'

अतः श्रावणी उपाकर्म या रक्षावन्धन का पर्व ऋषि तर्पण और वेदरक्षा का व्रत ग्रहण करने का पर्व है। आज के दिन से ब्राह्मणगण ऋषियों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए वेदों के स्वाध्याय व प्रवचन का व्रतग्रहण पूर्वक प्रारम्भ करते हैं। जैसा कि आश्वलायन गृह्य सूत्र के टीकाकार नारायण लिखता हैं कि– अध्ययनं अध्यायस्तस्योपाकरणं प्रारम्भो येन कर्मणा तदध्यायोपाकरणम्'।

अध्याय का अर्थ करते हुए याज्ञवल्क्य कहते हैंः–

''अधीयन्ते इति अध्याया वेदाः तेषामुपाकर्म उपक्रमम्।।

अर्थात् अध्याय का अर्थ वेद है उन्हीं का प्रारम्भ उपाकर्म या उपक्रम है। अब प्रश्न हो सकता है कि जिस स्वाध्याय को परमश्रम, परमतप और परमधर्म कहकर इतनी प्रशंसा की गई है, उसके करने से मात्र ऋषि तर्पण ही होता है या कुछ अन्य लाभ भी होता है इसके उत्तर में वैदिक ऋषियों का कहना है कि अविद्या या अज्ञान ही सब प्रकार के दुःखों का मूल कारण है और विद्या या ज्ञान ही एक मात्र तत्व है जो मनुष्य को दुःखों से मुक्त कराता है। अतः ज्ञान की महिमा खूब गाई गई है। यथा–

1. ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः।
2. विद्ययाऽमृतमश्नुते।
3. नहि ज्ञानेन सदृशं पवत्रिमिह विद्यते।
4. सर्वेषां दानानां ब्रह्मदानं विशिष्यते।
5. विद्या धनं सर्व धनं प्रधानं। इत्यादि

महाराज मनु कहते हैं कि यह स्वाध्याय से ही सम्भव है। उनके अनुसार–

यथा यथा हि पुरुषः शास्त्रं समधिगच्छति।
तथा तथा विजानाति विज्ञानं चास्य रोचते।।

– मनु. 4/20

जैसे–जैसे मनुश्य शास्त्रों को यथावत जानता है, वैसे–वैसे उस विद्या का विज्ञान बढ़ता जाता है और उसी में रुचि बढ़ती जाती है।

शतपथ ब्राह्मण में स्वाध्याय की प्रशंसा करते हुए उसके लाभ बताए गए हैं। यथा–

अथातः स्वाध्याय प्रशंसा। प्रिये स्वाध्याय प्रवचने भवतो युक्तमना भवत्यपराधीनोऽहरहरर्थान्त्साधयते सुखं स्वपिति परमचिकित्सक आत्मनो भवतिन्द्रियसंयमश्चैकारामता च प्रज्ञावृद्धिर्यशो लोकपक्तिः।।

– शतपथ. 11–5–7–1

अर्थात् स्वाध्याय और प्रवचन प्रिय ब्राह्मण युक्तमन (एकाग्रचित्त) हो जाता है। स्वाधीन रहते हुए प्रतिदिन अर्थों को प्राप्त करता है, सुख से सोता है, आत्मा का परम चिकित्सक हो जाता है, जितेन्द्रिय होकर आत्मस्थ हो एकाकी ही रम जाता है, बुद्धि बढ़ती है, यश और लोक का परिपाक होता है। लोक का परिपाक होने से लोग उसकी अर्चना करते हैं, उसे दान करते हैं, उसे अजेय और अवध्य मानकर उसके पक्के भक्त, प्रशंसक और अनुयायी हो जाते हैं।

महर्षि व्यास ने क्रिया योग के प्रथम साधन के रूप में स्वाध्याय को स्थान दिया है।

वे कहते हैं मनुष्य को स्वाध्याय से अभीष्ट विषय सिद्ध हो जाते हैं, और स्वाध्याय तथा योग के सम्पादन से परमात्मा भी प्रकाशित हो जाता है।

1. 'स्वाध्यायादिष्ट देवता सम्प्रयोगः'।

– योग. 2/44

2. स्वाध्यायात् योगमासीत् योगात् स्वाध्यायमामनेत्।
स्वाध्याय योग सम्पत्त्या परमात्मा प्रकाशते।।

अतः स्वाध्याय एक ऐसा साधन या कर्म है जिससे मनुष्य के अभ्युदय और निःश्रेयस, लोक–परलोक, भोग और मोक्ष दोनों ही सिद्ध हो जाते हैं। यही कारण था कि प्रत्येक ब्राह्मण स्वाध्याय को परमधर्म मानकर ज्ञान की शाश्वत् अक्षय निधि वेद की रक्षा, उनका प्रचार–प्रसार करने में प्राणप्रण से तत्पर रहता था। स्वसामर्थ्यानुसार एक वेद, एक वेदांग अर्थात् वेद का कोई न कोई भाग ग्रहण करके उसका पठन–पाठन करता, भावी पीढी का निर्माण कर उसे दाय भाग में वही दायित्व सौंपकर संसार से विदा लेता था।

इस प्रकार विद्याओं की रक्षा के लिए सम्प्रदाय होते थे जिनके द्वारा विद्याओं की रक्षा, अनुसन्धान, विकास आदि कार्य होते रहते थे। इससे समाज अज्ञानमुक्त और सुखी रहता था।

वर्तमान के सम्प्रदाय अज्ञान, अशान्ति, कलह, पाखण्ड, ठगी, व्यभिचार, अर्थ दूषण फैलाने और श्रम का अनादर करने वाले हैं। ये मनुष्य समाज के लिए कलंक बनकर रह गये हैं जिनसे छुटकारा पाना कठिन हो गया है। ब्राह्मणों के स्थान पर मूढ़, धूर्त साधु–संत तथाकथित गुरुओं का बोलबाला है और स्वाध्याय प्रवचन के नाम पर अनार्ष, अवैदिक ग्रन्थों की मिथ्या कथाओं और समाज का चरित्र हनन करने वालों तथा कथित ज्ञान यज्ञों की भरमार है। ऐसे में वेद की रक्षा कैसे होगी? आर्य समाज के नेताओं और विद्वानों को इस पर गम्भीर होकर विचार और उपाय करने का समय आ गया है।

'को वेदानुद्धरिष्यति?'

● **– सीताबाड़ी रोड़, केलवाड़ा, जिला– बांरा (राज.)**

स्वतन्त्रता दिवस पर विशेष

राष्ट्रीय जागरण के अग्रदूत – महर्षि दयानन्द सरस्वती

– स्व. आचार्य राजेन्द्र शर्मा

14 अगस्त, 1947 को रात्रि 12 बजे का समय और पराधीनता के पाश का टूटना और 15 अगस्त, 1947 का प्रारम्भ तथा स्वतंत्रता देवी का देश के प्रांगण में शुभागमन। हिमालय के शिखरों ने अभिनन्दन किया, हिन्द महासागर ने चरण प्रक्षालन किया, अरब सागर तथा बंगाल की खाड़ी ने अपनी तरंगों से अभिषेक किया। सम्पूर्ण जनमानस पुलक उठा। हर्षोल्लास जाग उठा। चारो ओर दिग्दिगंत में स्वागतम् – स्वागतम् का निनाद गूंज उठा। बालक किलक रहे थे। युवक उत्साहित हो रहे थे। वृद्ध आशा और विश्वास भरे अतीत को झांक रहे थे तथा भविष्य के स्वप्न सजा रहे थे। जय–जय के घोषों से सम्पूर्ण देश अभिनन्दन कर रहा था अवतरित स्वतंत्रता देवी का। भारत का राष्ट्रध्वज शान से लहरा रहा था। 'अपने देश में अपना राज' का स्वप्न साकार हुआ।

कितना लम्बा संघर्ष, कितनी लम्बी प्रतीक्षा और कितना त्याग बलिदान करना पड़ा, तब देश को अस्मिता प्राप्त हुई और हमारा मस्तक ऊँचा हुआ। इस स्वातंत्र्य संग्राम की सफलता में जिन महापुरुषों ने जीवन योगदान दिया। जिन्होंने समग्र देश में स्वाधीनता की लहर को उठाने का प्रयास किया और जिन्होंने जनमानस में राष्ट्रीय चेतना प्रज्ज्वलित कर स्वतंत्रता की ज्वाला को जलाया उन महापुरुषों में महर्षि स्वामी दयानन्द का नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित है। वे नव–जागरण के पुरोधा थे। राष्ट्रचेतना के अग्रदूत थे और स्वतंत्रता संग्राम के दूरदर्शी सेनानी थे। उन्होंने अपनी प्रखर राष्ट्रवादी विचारधारा द्वारा भारतीय राष्ट्रवाद को एक नया मोड़ दिया। प्रसुप्त चेतना को जगाया। उनके प्रयास से देश की जड़ता समाप्त हुई। जागृति आई, और भारत का नव–प्रभात अंगड़ाई लेने लगा। महर्षि दयानन्द जी ने गंगा, यमुना, नर्मदा और कावेरी के इस देश के नव–निर्माण के स्वप्न को साकार करने का सफल प्रयास किया।

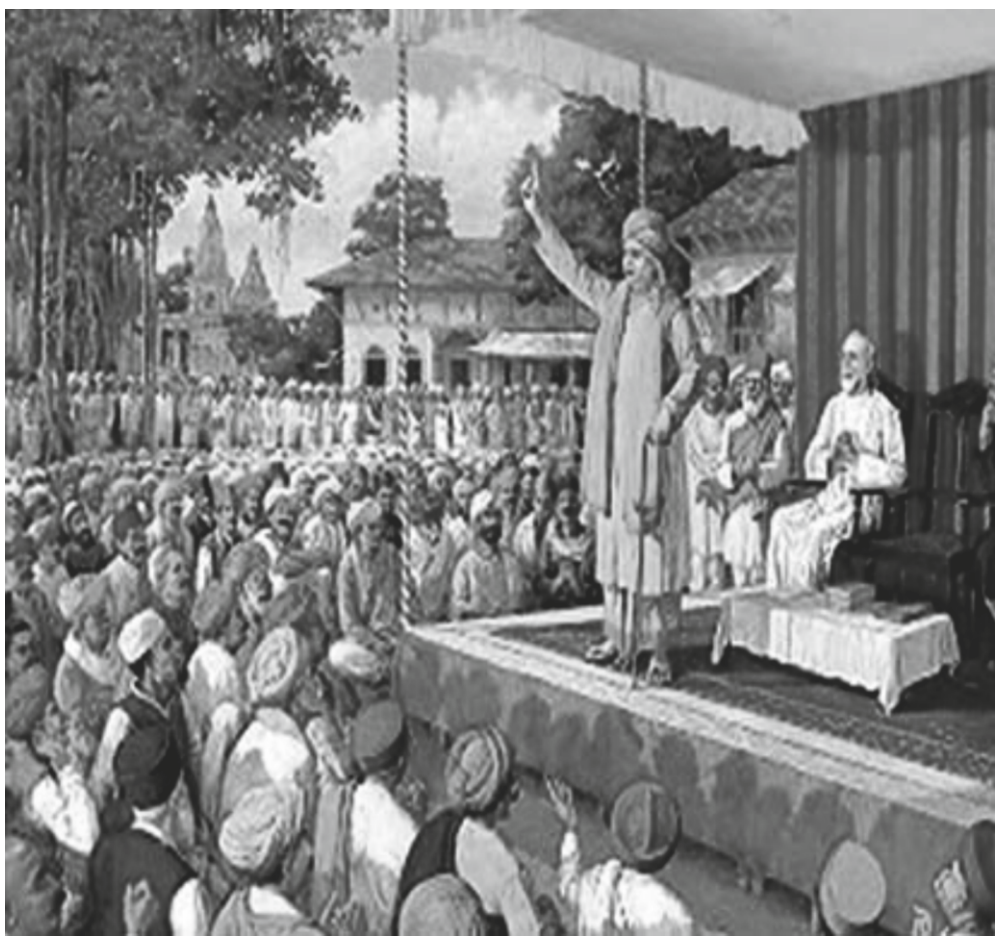

एक प्रसिद्ध समाज शास्त्री ने लिखा है कि जीवन एक ललकार है, चैलेंज है, आह्वान है। साधारणजन ललकार सुनकर भाग खड़े होते हैं। महापुरुष उसका अदम्य साहस से सामना करते हैं। चैलेंज का जवाब देते हैं। संघर्ष से पीठ नहीं दिखाते। अपितु समस्याओं से जूझकर प्राणों की बाजी लगाकर जमाने को पलट देते हैं। महर्षि जीवन एक लोकोत्तर महापुरुष का जीवन था। आशा, विश्वास से भरा पूरा उत्साह, उमंग से छलछलाता, धैर्य और साहस से जगमगाता, दूरदर्शिता और गहन चिन्तन से लहलहाता उनका जीवन था जिसने देश का कायाकल्प कर दिया।

महर्षि जब कर्म क्षेत्र में अवतरित हुए, चारो ओर ललकार थी। सबसे बड़ा चैलेंज था विदेशी दासता का। महर्षि की आत्मा ने निर्णय लिया कि मुझे इस दासता को उखाड़ फेंकना है। उनके समस्त कार्यक्रम, उनकी समस्त विचारधारा और उनके समस्त आन्दोलनों का सार था देश की स्वतंत्रता। प्रवृद्ध तथा पबुद्ध चेतना से ओत–प्रोत एक युवक अन्धविश्वास तथा रुढ़िवादिता के दुष्चक्र से अपने आपको निकालकर सच्चे शिव की खोज के दृढ़ संकल्प को लेकर माया, ममता का त्याग कर निकल पड़ते हैं। अपने संकल्प की पूर्ति हेतु देश के विभिन्न स्थानों पर जाते हैं, सम्पर्क स्थापित करते हैं और जन–जन को देखने और परखने का उनको अवसर मिलता है। सूक्ष्म तत्त्व की लालसा से सम्पन्न उस युवक के पारदर्शी नेत्र वाह्य परिस्थितियों के अनुभवों के प्रति बन्द रहे हों, यह सम्भव नहीं है। महर्षि ने उस परिभ्रमणकाल में सच्चे शिव को तो नहीं पाया। परन्तु समाज और देश में चारो ओर फैले हुए अशिव के दर्शन उन्होंने अवश्य किये। उन्होंने धर्म और राजनीति के नाम पर फैले हुए अंधविश्वासों को देखा, देश की अशिक्षा, दरिद्रता, पीड़ा, कराहट, चारित्रिक पतन तथा कायरता को देखा। अंग्रेजों के अत्याचार देखे, देश की शारीरिक ही नहीं मानसिक दासता को देखा। उन्होंने देखा कि देश की अस्मिता कहीं खो गई है और देश का जन–आहार, निद्रा, भय, मैथुन में ग्रस्त पशुवत जीवन जी रहा है। इसका कारण उन्होंने माना चार सदी की दासता। और उसकी समाप्ति के लिए उन्होंने अपने को आहूत किया।

पराधीनता की पीड़ा उनके मर्म को चीरती रहती थी। उसकी वेदना उनको व्यग्र बनाती रहती थी। देश की पीड़ा उनकी पीड़ा बन गई थी, परिणामतः उनकी वाणी से निकला प्रत्येक शब्द श्रवणकर्ता के मन में प्रखर राष्ट्र चेतना भर देता था। उनकी लेखनी से अंकित एक–एक शब्द राष्ट्रभक्ति का मंत्र फूंक देता था। स्वाधीनता के प्रति उनकी तड़प, उनके ग्रंन्थों, उनके भाषणों, उनके पत्र व्यवहारों और उनकी प्रार्थनाओं में सर्वत्र दिखाई देती है।

महर्षि घोषणा करते हैं – 'स्वदेशी राज्य सर्वोपरि होता है'। हार्दिक पीड़ा से लिखते हैं कि – 'आर्यों का अखण्ड, स्वतंत्र, निर्भय, स्वाधीन राज्य नहीं है जो थोड़े से राज्य हैं वे विदेशियों से पदाक्रान्त हैं।' 1873 में इस देश के गर्वनर जनरल लॉर्ड नार्थ ब्रुक से वे निर्भयता पूर्वक कहते हैं कि – 'मैं तो सायं प्रातः ईश्वर से यह प्रार्थना किया करता हूँ कि इस देश को विदेशियों की दासदा से शीघ्र मुक्त करें।' अदीनाः स्याम शरदः शतम् को विनियुक्त कर महर्षि ने जन–जन में स्वतंत्रता के प्रेम को जागृत करने का अभिनव प्रयोग किया।

1857 का प्रथम स्वातंत्र्य संग्राम उन्होंने देखा ही नहीं था अपितु तथ्य उद्घाटित करते हैं कि राष्ट्रभक्त दयानन्द उस चिंगारी को प्रज्ज्वलित करने में संलग्न रहे और उस संग्राम का उन्होंने नेतृत्व किया था। प्रयास विफल हुआ। अंग्रेजों ने अमानुशिक अत्याचार किये, भय और आतंक का राज्य छा गया। हताशा के इस वातावरण में महर्षि को सान्निध्य मिला प्रज्ञा चक्षु विरजानन्द जी का और उनके उन गुरुवर ने उनको मांज कर निखार दिया। कुन्दन बना दिया और महर्षि देश का सर्वांगीण कायाकल्प करने हेतु एक नवीन तेजस्विता और दृढ़ संकल्पशीलता के साथ कार्यक्षेत्र में उतर पड़े। अंग्रेजों के अत्याचारों ने राष्ट्र की चेतना को निर्ममता से कुचल दिया था। राष्ट्रभक्ति की भावना को क्रूरता पूर्वक दबा दिया था। हताशा, निराशा और उत्साहहीनता के इस माहौल में उन्होंने अपनी वाणी और लेखनी के माध्यम से भारत महिमा का, आत्म–गौरव का बखान किया और स्वदेश भक्ति का पाठ पढ़ाया। आर्यों के अखण्ड चक्रवर्ती राज्य की प्रार्थनाएँ की और गौरवमय अतीत का स्मरण कराया। इस प्रकार उन्होंने कुचली चेतना को जगाने का सफल प्रयास किया।

महर्षि के अंग–अंग में राष्ट्रीयता जगमगा रही थी, उनके द्वारा किये गये समस्त कार्यों का अन्तिम लक्ष्य स्वाधीनता ही था। आर्यों के अखण्ड चक्रवर्ती राज्य के वे स्वप्न देखा करते थे। इसी राष्ट्रीय चेतना को उन्होंने आर्य समाज तथा अपने भक्तों में भरा था। उस समय का प्रत्येक आर्य राष्ट्रभक्ति का जलता हुआ अंगारा था। इसीलिए एक प्रसिद्ध अंग्रेज ने कहा था कि – 'किसी भी आर्य समाजी की खाल को खुरचकर देखो तो वहाँ क्रांतिकारी दयानन्द लिखा होगा।' उन्होंने एक ऐसी जीवन पद्धति दी जिसमें से निकला व्यक्ति आत्मसंयमी, दृढ़निश्चयी, प्रखर देशभक्ति से भरा हुआ और –'माँ प्रगाम यथो वयम्' की भावना से युक्त होता था। राष्ट्रे वयम् जागृयाम् की प्रबल आकांक्षा उसमें होती थी।

राष्ट्रीय क्रांति, सामाजिक क्रांति, राजनीतिक क्रांति, धार्मिक क्रांति महर्षि का तेज सबको गति दे रहा था। राष्ट्रीय जागरण के सभी स्तरों की पृष्ठभूमि उन्होंने दृढ़ता से निर्मित की थी। महर्षि चतुर्मुखी जागरण के आद्य प्रवर्तक थे। लोकसभा के अध्यक्ष रहे श्री अनन्त शयनम अयंगर ने कहा था कि 'गाँधी जी राष्ट्र के पिता थे तो महर्षि दयानन्द राष्ट्र के पितामह थे।' उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज आन्दोलन था जो उनकी प्रेरणा के अनुसार धार्मिक, सामाजिक और राष्ट्रीय पुनर्जागरण को लेकर चला। प्रत्येक आर्य समाज एक ऐसा स्वतंत्रता केन्द्र था जहाँ शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक तथा आत्मिक रूप से सबल, सशक्त, संकल्पयुक्त, देशभक्त निर्मित होते थे जो रुकना, झुकना नहीं जानते थे और स्वतंत्रता यज्ञ में अपनी आहुति देने के लिए सदा कटिबद्ध रहते थे। महर्षि के निर्देशित पथ के पथिक बनकर आज भी हम स्वराज्य को सुराज में परिणित कर सकते हैं जिसकी आज महती आवश्यकता है।

– आर्य समाज शकरपुर, दिल्ली–92

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित साहित्य

'श्रीमद्दयानन्द प्रकाश'
लेखक–स्वामी सत्यानन्द,
मूल्य 150 रुपये, पृष्ठ–455

'मनुस्मृति'
भाष्यकार पं. तुलसीराम स्वामी,
मूल्य 200 रुपये, पृष्ठ–595

उपरोक्त दोनों पुस्तकें बढ़िया कागज व प्रिंटिंग के साथ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा "महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड (रामलीला मैदान), नई दिल्ली–2 पर 25 प्रतिशत विशेष छूट पर उपलब्ध हैं। डाक से मंगाने पर एक प्रति के हिसाब से 25 रुपये डाक व्यय अतिरिक्त देना होगा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

लागत मूल्य 4100/- रुपये

भारी छूट पर उपलब्ध

4100/- रुपये का एक वेद सैट 25 प्रतिशत की छूट पर उपलब्ध है

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 200/- रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी।

अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।